



शोधायन

(मानविकी, समाज विज्ञान, वाणिज्य की अन्तर्राष्ट्रीय सन्दर्भित शोध पत्रिका)

वर्ष : 6
अंक : 27
जनवरी - मार्च 2019

GREGN. No. 10986/2012-CO/C
ISSN 2249 - 7536 Shodhayan
MPHIN 32060/2015
Refrd. & UGC apprvd. Jnl. No. 64453



Shodhayan

(An International Quarterly Multi-disciplinary UGC approved Research Journal)

International Overview

Vol. 27, Year - 6, January to March 2019

अनुक्रमणिका

क्र.	विषय विवरण	लेखक	पृष्ठ संख्या
हिन्दी साहित्य -			
1.	मुक्तिबोध के काव्य में चेतना और प्रतिबद्धता	डॉ. साधना देशमुख मोहिते	01 - 04
2.	भक्तिकालीन समाज में तुलसीदास की प्रगतिशील चेतना	अवधेश कुमार डॉ. राजेन्द्र यादव ✓	05 - 11
3.	हिन्दी सन्तों का साधना पक्ष	अनुज कुमार शुक्ल	12 - 19
4.	साठोत्तरी महिला कथाकारों का साहित्य और स्त्री विमर्श	ऊषा कुमारी	20 - 22
5.	प्रगतिशील कविता में वैवाहिक एवं पारिवारिक विघटन की समस्या	रामाश्रय पटेल	23 - 27
6.	ढोला की गायन पद्धति	डॉ. संतोष कुमार शर्मा	28 - 31
वाणिज्य, अर्थशास्त्र एवं प्रबंध शास्त्र -			
7.	Impact of Organizational Environment on Job satisfaction among Police Employee in Gwalior	Jyoti Rajouriya Dr. P.K. Bansal	32 - 35
8.	A Study of Mutual Fund Performance	Dr. Tripti Tripathi	36 - 44
9.	Impact of Training and Development on Job Satisfaction of Employee in NTPC	Dr. Lilesh Gautam	45 - 48
10.	Creative Accounting: Nature, Incidence and Ethical Issues	Dr. Hemant Kumar Dubey	49 - 52
11.	Emerging The New Trends In The Social Life of Workers of Brick Field Units...	Dr. Poonam Chandra	53 - 55
12.	साधारण बीमा व्यवसाय में तृतीय पक्ष दावों के संबंध में समस्या एवं सुझाव	डॉ. किरण निम्बालकर	56 - 57
शिक्षा शास्त्र -			
13.	प्रारम्भिक शिक्षा के विकास में सामाजिक एवं आर्थिक दशाओं के पड़ने वाले प्रभाव का समीक्षात्मक अध्ययन	डॉ. नरेन्द्रसिंह	58 - 59

भक्तिकालीन समाज में तुलसीदास की प्रगतिशील चेतना

*अवधेश कुमार

गोस्वामी तुलसीदास भक्तिकाल के सर्व-समर्थ कवि हैं। वे राम के अनन्य भक्त होने के साथ ही श्रेष्ठ समाज-सुधारक और युग प्रवर्तक कवि भी हैं। तुलसी ने जनजीवन के लोकमंगल की कामना को ही सर्वोपरि मान कर साहित्य का सृजन किया। सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक एवं सांस्कृतिक पुनरुत्थान में जिस प्रगतिशील साहित्य की अवतारणा की, वह निःसंदेह 'जनहिताय' की भावना की अभिव्यंजना है। डॉ. उदयभानु सिंह के अनुसार, "तुलसी महाकवि थे। काव्यस्रष्ट और जीवनद्रष्टा थे। वे धर्मनिष्ठ समाज-सुधारक थे। अपने साहित्य में उन्होंने समाज का आदर्श प्रस्तुत किया, ऐसा महाकाव्य रचा जो हिन्दी-भाषी जनता का धर्मशास्त्र भी बन गया। तुलसी गगनविहारी कवि नहीं थे, उनकी लोकदृष्टि अलौकिक थी। उन्होंने आदर्श की संकल्पना को यथार्थ जीवन में उतारा। उनके द्वारा रचे गये गौरव-ग्रंथ हिन्दी साहित्य के रत्न हैं। सौन्दर्य और मंगल का, प्रेय और श्रेय का, कवित्व और दर्शन का असाधारण सामंजस्य उनके साहित्य की महती विशेषता है।"

तुलसीदास का यह विशाल दृष्टिकोण ही उनकी प्रगतिशीलता की प्रामाणिकता है। उन्होंने विगत को आयात का आकर्षण दिया, जीवन को आत्मा दी, संस्कृतियों की पुनरुत्थान दिया, और मानवीय संवेदनाओं से ओत-प्रोत 'रामत्व' के दर्शन की गरिमा का लोक धर्म दिया। तुलसी काव्य में मनुष्यता का नवीन प्रतिष्ठान दिखाई पड़ता है। लोकमंगल के प्रतिष्ठान में तुलसी के

**डॉ. राजेन्द्र यादव

पूर्व भी ऐसी महाना विभूतियाँ थीं, जिनका दृष्टिकोण निःसंदेह व्यापक और विराल था, किन्तु वे उतने सफल नहीं हो सके; जितने कि तुलसी और उनका साहित्य। देखा जाय तो भक्तिकाल में कबीर ने लोक जीवन को निर्गुण के दर्शन में देखा, जायसी ने प्रेम के माध्यम से सगुण रूप में निर्गुण की कल्पना की, सूरदास ने कृष्ण को बंशी की तानों में विश्व को आनन्दित करके उन्हें लोकरंजन की भावना में देखा। पर, तुलसी ने इन सब से अलग राम के रूप को समाज से जोड़कर मर्यादा पुरुषोत्तम राम को 'लोकरक्षक' के रूप में ईश्वरीय रूप दिया। इस प्रकार एक का लोकदर्शन, अटपटापन लिये था, जो जन-जीवन के निकट नहीं आ पाया था, दूसरे की भावना में संगीत की धुन थी, जो जीवन को सान्त्वना देती थी, न कि संरक्षण। लेकिन उस रामय समाज की दृष्टि से लोकसंरक्षण ही की आवश्यकता थी। एक ऐसे चरित्र की नितान्त आवश्यकता थी, जिसका व्यक्तिगत संरक्षण दे और विश्वास से जीवन को आत्मा दे। क्योंकि मुस्लिम शासन से जनता के मन में घोर आत्म-पीड़न व्याप्त था। ऐसे समय में दिव्य पुरुष के प्रति आस्थावान होना जनजीवन के प्रति स्वाभाविक था। इस दिशा में तुलसी ने समाज को 'राम' दिया। लोक में इसके पहले वाल्मीकि रामायण, आध्यात्म-रामायण आदि ने भी तो राम दिया था, लेकिन उस राम के पास दिव्यता एवं लोककल्याण की व्यापक भावना नहीं थी। इस दिशा में तुलसी ही अधिक सफल रहे। इन्होंने राम को व्यक्तित्व संरक्षण का प्रतीक बनाकर समाज में प्रस्तुत किया।

*शोधार्थी, डॉ. हरीसिंह गौर केन्द्रीय विश्वविद्यालय, सागर (म.प्र.)

**सहायक प्राध्यापक (हिन्दी विभाग) डॉ. हरीसिंह गौर केन्द्रीय विश्वविद्यालय, सागर (म.प्र.), मो. 8853309388